दिनांक १९ मई २०१२ को सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका के दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल—सह—कुलाधिपति डा० सैयद अहमद का अभिभाषण

राज्य के उप मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन, मंत्री, मानव संसाधन विकास विभाग श्री बैद्यनाथ राम, माननीय सांसद एवं विधायकगण, कुलपति प्रो० एम० बशीर अहमद खान, प्रतिकुलपति, कुलसचिव, सिनेट एवं सिंडिकेट के सदस्यगण, उपस्थित शिक्षाविद्, केन्द्र एवं राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारीगण, सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय के अधीनस्थ महाविद्यालयों के सभी प्राचार्य एवं शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मी, अभिभावकगण, उपाधि प्राप्त करनेवाले विद्यार्थीगण, प्रेस एवं मीडिया के दोस्तों !

सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में शरीक होकर मुझे अपार हर्ष और आनन्द का एहसास हो रहा है। इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी लोगों के लिए यह दिवस, उल्लास का दिवस है। मैं इस अवसर पर आप सभी को बधाई देना चाहूँगा, विशेषकर उन विद्यार्थियों

को, जो आज उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। इसमें दो राय नहीं कि यह दिन उनके जीवन के साथ–साथ उनके अभिभावकों के जीवन का भी ऐतिहासिक दिन है। इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होने के नाते मुझे भी इस क्षण पर गर्व हो रहा है।

झारखण्ड राज्य में विकास की असीम संभावनाएँ है। यहाँ प्राकृतिक एवं खनिज संसाधन प्रचुर मात्रा में मौजूद है। इस प्रदेश की जीवंत कला–संस्कृति ने इसे अनुपम सौंदर्य और समृद्धता प्रदान की है। हमें अपनी बौद्धिक क्षमता व कुशलता से इसे और अधिक सुंदर व समृद्ध बनाना है क्योंकि बिना बौद्धिक संपदा के हम प्राकृतिक और खनिज संपदा का कुशलतापूर्वक समुचित उपयोग नहीं कर सकते। हमारी पृथ्वी के गर्भ में जो अपार खनिज संपदा है, जिससे हमारा विकास हो सकता है, उसे जानने और समझने के साथ ही, उसका कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए भी ज्ञान की जरूरत है। विश्वविद्यालय की बड़ी भूमिका इस अर्थ में है कि वह ज्ञान और सूचना के विशाल भंडार से सुपरिचित होते हुए उसमें कितना नया और सार्थक जोड़ पाता है।

सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय देश के अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी सिदो, कान्हु दो भाईयों के नाम पर स्थापित है। सिदो, कान्हु तथा चाँद एवं भैरव ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में अपनी शहादत दी थी, जो देश की आजादी हेतु इस क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी की जीती—जागती मिसाल है। सिदो, कान्हु तथा चाँद एवं भैरव ने इस क्षेत्र के लोगों के बीच व्यापक राष्ट्रीय चेतना एवं भावना विकसित करने का काम किया, जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। मुझे खुशी है कि सिदो, कान्हु के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने को देश के उत्कृष्ट विश्वविद्यालयों में शुमार हेतु प्रयास कर रहा है।

किसी भी राज्य का समग्र विकास शिक्षा के व्यापक प्रचार—प्रसार से ही सुनिश्चित किया जा सकता है। हमारे देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले युवाओं की संख्या काफी कम है। आँकड़ों पर गौर करें तो उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र—छात्राओं की संख्या महज ६ से ७ फीसदी है, जबकि विकसित देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र—छात्राओं का प्रतिशत ४० से भी अधिक है। अत: हमें भारत को विकसित देशो की श्रेणी में लाने के लिए

उच्चशिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु सार्थक प्रयास करनी होगी।

देवियों व सज्जनों, इस विश्वविद्यालय का भौगोलिक दृष्टिकोण से एक विशिष्ट पहचान है। राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति होने का मुझे जब से अवसर प्राप्त हुआ है, मेरा प्रयास यही रहा है कि राज्य में स्थापित सभी विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक सत्र नियमित हो, सिन्डिकेट और सिनेट की बैठकें अपने निर्धारित समय पर आहूत हो, परीक्षाफल समय से प्रकाशित हों और विश्वविद्यालयों के पास जो भी आधारभूत संरचना उपलब्ध है उसका पूर्ण सदुपयोग हो। हमारे राज्य में स्थापित विश्वविद्यालयों की गिनती देश के बेहतर व उत्कृष्ट विश्वविद्यालयों में हों एवं यहाँ बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुलभ हो, इस हेतु मैं राजभवन में निरंतर विश्वविद्यालयों के कुलपति समेत अन्य पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक किया करता हूँ। मेरा सदा प्रयास रहा है कि लोगों को उनका यथोचित हक मिले, विद्यार्थियों के साथ—साथ शिक्षकों व कर्मियों को भी उनका वाजिब हक मिले, उनकी समस्याओं का निदान शीघ्रता से कर सकूँ।

विश्वविद्यालयों के समीक्षा बैठक के दौरान मुझे जब यह जानकारी मिली कि विश्वविद्यालय से जुड़े शिक्षकों व कर्मियों के क्लेम से जुड़े भारी तादाद में वाद न्यायालय में लंबित है, तो मुझे काफी दु:ख व हैरानी हुई। अत: लंबित वादों के त्वरित निष्पादन हेतु मैंने झारखण्ड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं झालसा के कार्यकारी अध्यक्ष से संपर्क कर लोक आदालत के आयोजन हेतु आग्रह किया। उन्होंने मेरे आग्रह पर विचार करते हुए इसे शीघ्र ही अमलीजामा पहनाया। इस लोक अदालत में बहुत से लोगों ने भाग लिया, जिसका जो वाजिब हक था, उन्हें मुहैया कराया गया। यह काफी सकारात्मक रहा।

दोस्तों, मैं विश्वविद्यालय से विज़नरी होने की अपेक्षा करता हूँ। बिना विज़न के हम आगे नहीं बढ़ सकते। विज़न के साथ कर्म, निष्ठा, लगन, उद्यम, साहस, समर्पण आदि की भी आवश्यकता है। विज़न को मूर्तरूप देने के लिए हमें रचनाशील मस्तिष्क पर सदैव ध्यान देना चाहिए और इस विश्वविद्यालय को नयी रचनाशीलता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। युवा सबसे अधिक रचनाशील होते हैं और किशोरावस्था, उमंग, उत्साह और छलांग लगाने की अवस्था

है। संस्थाओं के साथ भी यही बात है। सपना देखना बहुत जरूरी है और विश्वविद्यालय के पास भी एक सपना होना चाहिए और उसे धरती पर सफलतापूर्वक उतारने के लिए समर्पण की भावना होनी भी चाहिए। विश्वविद्यालय को नयी रचनाशीलता का केन्द्र बनना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जो रचनाशीलता छुपी हुई है, उसकी तलाश करते हुए उसका विकास करना चाहिए। दूसरी मुख्य बात यह है कि दुनिया में जो कुछ ज्ञान उपलब्ध है, उसकी हमें जानकारी होनी चाहिए और अपने को हमेशा आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। विश्वविद्यालय शिक्षा और ज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र है।

आज का युग ग्लोब्लाईजेशन का युग है। हमें रोजगारपरक शिक्षा को बढ़ावा देना होगा, ताकि हमारे युवा विश्व की चुनौतियों के अनुरुप राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के विभिन्न रोजगारों में अपनी जगह बना सकें। शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का ही जरिया न बनकर स्वालंबी और आत्मनिर्भर बनने का माध्यम बने, इसके लिए विगत कुछ वर्षो में राज्य के विश्वविद्यालयों में नये व्यवसायिक

पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गये है तथा व्यवसायिक शिक्षा पर जोर दिया गया है।

शिक्षा का मूल्य और नैतिकता से संबंध सदैव बना रहेगा। वास्तविक शिक्षा किसी को मूल्यरहित और अनैतिक नहीं बनाती है। शिक्षित समुदाय ही किसी भी समाज का पथ–प्रदर्शक होता है। समाज का नेतृत्व करने के लिए उच्चतर मूल्यों का निर्वाह करना आवश्यक है। विद्यार्थियों, आप जिस किसी भी क्षेत्र का चयन करें, आपको उस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करनी है और यह केवल श्रम और लगन से ही संभव है। छात्रों का उद्देश्य केवल परीक्षा देना और डिग्री लेना नहीं होने चाहिए। उन्हें अपने को सब तरह से सक्षम बनाना होगा जिससे वे इस क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि पूरे देश व विश्व में कहीं भी असफल न हो। यह मेहनत, लगन, उद्यम और श्रम के बिना संभव नहीं है।

विश्वविद्यालय में एक सुन्दर और सही गति होनी चाहिए। हमारे सामने दिशाएँ साफ होनी चाहिए और स्वयं रास्ता बनाने की हममें क्षमता भी होनी चाहिए। विश्वविद्यालय के अध्यापकों को सच्चे अर्थों में शिक्षा के प्रति समर्पित होना चाहिए। बिना अध्ययन के अध्यापन का

कोई अर्थ नहीं है। शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। शोध का स्तर हमें ऊँचा उठाना होगा। उसकी गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। गुरू–शिष्य संबंध और परिवेश पर ध्यान देने की जरूरत है। बदलते हालात में इन सब में जीवंतता और गतिशीलता जरूरी है। हमें लड़कियों, पिछड़े समुदायों, अल्पसंख्यकों और अनुसूचित जनजातियों के उच्च शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की भी जरूरत है। शिक्षा प्रयोगात्मक भी होनी चाहिए और वैसे नये विषयों की पढ़ाई होनी चाहिए, जो छात्र–छात्राओं के लिए विशेष उपयोगी हों।

विद्यार्थियों, वैसे सीखने के लिए तो सारा जीवन भी छोटा है, परन्तु अपनी पढ़ाई के लिए जो अवस्था और समय आपके लिए निर्धारित थी, आपने उसका सदुपयोग किया, सफलता पायी, डिग्रियां प्राप्त की। अभी तक आप अपने माता–पिता, गुरुजन तथा ज्येष्ठ लोगों के परामर्श से चलते रहे, परन्तु अब आपको जीवन में अपना मार्ग स्वंय ढूंढ़ना है, बनाना है। शिक्षा ज्ञान का भंडार है किंतु दीक्षा विवेक का द्वार खोलती है। विवेक के बल पर ही जीवन में प्रगति के मार्ग निर्धारित होते हैं। मैं जानता हूँ कि डिग्रीधारक

छात्र—छात्राओं के समक्ष उनका भविष्य खड़ा रहता है, लेकिन यह भी सच है कि सिर्फ डिग्रियाँ प्राप्त करने से ही शिक्षा का समापन नहीं होता, अपितु एक नयी यात्रा का आरंभ होता है। पूरी गति और वेग के साथ, विवेक और समझदारी के साथ वे अपना और समाज का विकास करें, यही हमारी मंगलकामना है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!